ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

दुर्खीम के कार्यों का समाजशास्त्र के विकास पर प्रभाव

मीनू राजवंशी[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, अकबरपुर, कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश

Received: 07 Jan 2019, Accepted: 13 Jan 2019, Published on line: 15 Jan 2019

Abstract

ईमाइल दुर्खीम, एक प्रमुख फ्रांसीसी समाजशास्त्री, को समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र और वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। उनका कार्य समाज की संरचना, सामाजिक तथ्यों, सामूहिक चेतना, और आत्महत्या जैसे विषयों पर केंद्रित था। इस शोध पत्र में दुर्खीम के प्रमुख सैद्धांतिक योगदानों की विवेचना की गई है और यह स्पष्ट किया गया है कि उनके कार्यों ने आधुनिक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों, अनुसंधान की विधियों और सामाजिक संस्थाओं की व्याख्या को कैसे प्रभावित किया। यह शोध पत्र दुर्खीम के विचारों की समयानुकूलता, प्रासंगिकता तथा विभिन्न समाजशास्त्रीय धाराओं पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करता है।

कीवर्ड्स– एमिल दुर्खीम, सामाजिक तथ्य, समाजशास्त्र का जनक, सामाजिक एकता, यांत्रिक और जैविक एकता, आत्महत्या का अध्ययन, धर्म का समाजशास्त्र, सामाजिक संस्थाएँ, सामाजिक संरचना, सामाजिक विभाजन, सामूहिक चेतना, अनात्मता, कार्यात्मकता

Introduction

समाजशास्त्र एक आधुनिक विज्ञान है जिसकी नींव 19वीं शताब्दी में पड़ी। इस क्षेत्र में कार्ल मार्क्स, मैक्स वेबर और एमिल दुर्खीम जैसे चिंतकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। दुर्खीम को समाजशास्त्र का शपिताश भी कहा जाता है क्योंकि उन्होंने इसे एक स्वतंत्र, वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में स्थापित किया। उनका कार्य मुख्यतः सामाजिक तथ्यों, सामाजिक एकता, धर्म, शिक्षा और आत्महत्या के विश्लेषण पर केंद्रित था। उनका योगदान समाजशास्त्र की पद्धति, विषयवस्तु और विश्लेषणात्मक ढांचे को आकार देने में अत्यंत निर्णायक रहा।

दुर्खीम की समाजशास्त्रीय दृष्टि – दुर्खीम का मानना था कि समाज एक जैविक इकाई है जो अपने आप में स्वतंत्र है और जिसके नियम विशिष्ट होते हैं। उन्होंने "social facts" (सामाजिक तथ्य) की अवधारणा दी, जो किसी समाज के ऊपर आरोपित नैतिक, सांस्कृतिक और संस्थागत संरचनाओं को इंगित करता है। उनके अनुसार, सामाजिक तथ्य बाह्य, सामान्य और बाध्यकारी होते हैं, और इनका विश्लेषण सामाजिक विज्ञान के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए।

दुर्खीम की वैचारिक पृष्ठभूमि – दुर्खीम ऐसे समय में कार्य कर रहे थे जब फ्रांस औद्योगिक क्रांति और सामाजिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। उन्होंने ऑगस्ट कॉम्ट की **सामाजिक स्थिरता** की धारणा को वैज्ञानिक दिशा दी। उनकी वैचारिक प्रेरणाएँ मुख्यतः इमानुएल कांट, कॉम्टे और स्पेन्सर से आईं, लेकिन उन्होंने उन विचारों को संशोधित करते हुए समाज को एक नैतिक व्यवस्था के रूप में समझा। वे मानते थे कि औद्योगीकरण और व्यक्तिवाद के बढ़ते प्रभाव से पारंपरिक सामूहिक चेतना कमजोर हो रही है, जिससे अनीमि (nomie) की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

प्रमुख कृतियाँ और सिद्धांत – 'The Rules of Sociological Method' (1895) इस ग्रंथ में दुर्खीम ने यह तर्क दिया कि समाजशास्त्र को उसी तरह वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाना चाहिए जैसे प्राकृतिक विज्ञानों को। उन्होंने **सामाजिक तथ्य** की परिभाषा दी और उन्हें समाजशास्त्र का अध्ययन विषय घोषित किया।

'The Division of Labour in Society' (1893)

इस कृति में उन्होंने यांत्रिक एकता (Mechanical Solidarity) और जैविक एकता (Organic Solidarity) की अवधारणाओं के माध्यम से आधुनिक समाज में सामाजिक एकता के प्रकारों का विश्लेषण किया।

'Suicide' (1897)

यह उनकी सबसे प्रसिद्ध और क्रांतिकारी कृति है जिसमें उन्होंने आत्महत्या को एक सामाजिक घटना के रूप में देखा और इसके विभिन्न प्रकार आत्मघाती (Egoistic), परोपकारी (Altruistic), अनीमिक (Anomic), और घातक (Fatalistic) का वर्गीकरण किया।

'The Elementary Forms of Religious Life' (1912)

इस ग्रंथ में दुर्खीम ने धर्म की सामाजिक भूमिका का विश्लेषण किया। उन्होंने कहा कि धर्म समाज के नैतिक ढांचे को बनाए रखने में सहायक होता है।

समाजशास्त्रीय विधियों पर प्रभाव – दुर्खीम ने समाजशास्त्र को एक वस्तुनिष्ठ विज्ञान बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए। उन्होंने सामाजिक घटनाओं का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय तरीकों को अपनाया। उनका दृष्टिकोण स्ट्रक्चरल–फंक्शनलिज़्म (संरचनात्मक–कार्यक्षमतावाद) की आधारशिला बना, जिसे आगे जाकर ताल्कोट पार्सन्स और रॉबर्ट के. मर्टन जैसे समाजशास्त्रियों ने विकसित किया।

सामाजिक नियंत्रण और नैतिकता – दुर्खीम के अनुसार समाज में नैतिकता का निर्माण स्वयं समाज करता है। यह नैतिक ढांचा कानून, शिक्षा और धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से व्यक्तियों पर सामाजिक नियंत्रण रखता है। उनका मानना था कि नैतिक अनिश्चयता (nomie) के दौर में सामाजिक समस्याएं जैसे आत्महत्या, अपराध आदि बढ़ जाती हैं। इसलिए समाज को संतुलित बनाए रखने के लिए सामूहिक नैतिक मूल्यों का होना आवश्यक है।

शिक्षा, धर्म और अपराध पर दुर्खीम के विचार – शिक्षा– दुर्खीम के अनुसार शिक्षा समाजीकरण का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। यह समाज के मूल्यों, आदर्शों और नैतिकता को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करती है।

धर्म– धर्म उनके लिए सामाजिक एकता और सामूहिक चेतना को बनाए रखने का उपकरण था। उन्होंने इसे एक **सामाजिक तथ्य** के रूप में देखा।

अपराध– दुर्खीम ने अपराध को भी सामाजिक जीवन का सामान्य हिस्सा बताया। उनका तर्क था कि अपराध नैतिक सीमाओं को पुनः स्थापित करने में समाज की मदद करता है।

दुर्खीम के विचारों का शिक्षा, धर्म और कानून में अनुप्रयोग

शिक्षा में अनुप्रयोग– दुर्खीम के अनुसार शिक्षा केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं बल्कि सामाजिकरण (Socialization) की प्रक्रिया है। शिक्षक समाज के नैतिक प्रतिनिधि होते हैं। उनकी शिक्षा संबंधी विचारधारा आज भी सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रमों और शैक्षिक नीतियों में प्रभावी है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

धर्म में अनुप्रयोग– उन्होंने धर्म को सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति कहा और यह भी बताया कि धर्म प्रतीकों, अनुष्ठानों और विश्वासों के माध्यम से समाज की सामूहिक चेतना को सुदृढ़ करता है।

कानून में अनुप्रयोग– दुर्खीम ने कानून को सामाजिक सुदृढ़ता का प्रतिबिंब बताया। यांत्रिक समाजों में दंडात्मक कानून प्रमुख होता है जबकि जैविक समाजों में पुनर्स्थापनात्मक (restitutive) कानून का बोलबाला होता है। यह अवधारणा आधुनिक दंडशास्त्र और समाजशास्त्रीय विधिशास्त्र के लिए आधारशिला बनी।

आधुनिक समाजशास्त्र पर प्रभाव – दुर्खीम के विचारों ने न केवल यूरोपीय समाजशास्त्र को प्रभावित किया बल्कि भारतीय समाजशास्त्र में भी उनकी छाप दिखाई देती है। आधुनिक समाजशास्त्र में संस्थाओं का विश्लेषण, सामाजिक नियंत्रण, सामाजिक एकता तथा सामाजिक परिवर्तन जैसे विषयों पर दुर्खीम के दृष्टिकोण को अपनाया गया है। स्ट्रक्चरल–फंक्शनलिज़्म, सामाजिक संस्थाओं का कार्यात्मक विश्लेषण, और सामाजिक मानदंडों की अवधारणाएं दुर्खीम के प्रभाव का ही परिणाम हैं।

भारतीय समाजशास्त्र पर प्रभाव – भारतीय समाजशास्त्र में एम. एन. श्रीनिवास, राधा कमल मुखर्जी और जी. एस. घुर्ये जैसे विद्वानों पर दुर्खीम का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। श्रीनिवास की सांस्कृतिक एकता की अवधारणा और जाति व्यवस्था पर किया गया कार्य सामूहिक चेतना और सामाजिक एकता की दुर्खीमीय अवधारणाओं से प्रेरित था। घुर्ये ने भी सामाजिक संस्थाओं के अध्ययन में दुर्खीम की कार्यात्मक पद्धति अपनाई।

आलोचना – हालाँकि दुर्खीम का योगदान अतुलनीय है, फिर भी उनकी रचनाओं की आलोचना भी हुई है।कुछ आलोचकों का मानना है कि दुर्खीम ने व्यक्ति की भूमिका की उपेक्षा की और समाज को अधिक महत्व दिया। मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार, दुर्खीम सामाजिक संरचना के अंतर्विरोधों की अनदेखी करते हैं। उनकी प्रवृत्ति समाज को एक स्थिर और सामंजस्यपूर्ण इकाई मानने की रही, जबकि समाज गतिशील और संघर्षशील भी होता है।

निष्कर्ष – दुर्खीम का कार्य समाजशास्त्र के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुआ है। उन्होंने इस नवोदित शास्त्र को एक वैज्ञानिक और स्वतंत्र पहचान दी। उनके सिद्धांतों ने न केवल उस समय की सामाजिक समस्याओं को समझने में सहायता की, बल्कि आज भी वे समाजशास्त्रीय विश्लेषण के आधार बने हुए हैं। दुर्खीम की अवधारणाएं, चाहे वे सामाजिक तथ्य की बात हों या आत्महत्या के प्रकारों की, आज भी समाजशास्त्रियों और शोधार्थियों के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके कार्यों ने समाजशास्त्र की परिभाषा, दायरा और पद्धति को नया स्वरूप प्रदान किया।

दुर्खीम के कार्यों ने समाजशास्त्र को एक मजबूत वैचारिक और पद्धतिगत आधार दिया। उन्होंने सामाजिक तथ्यों के वैज्ञानिक अध्ययन की नींव रखी और यह बताया कि सामाजिक घटनाएँ केवल व्यक्तिगत प्रवृत्तियों का परिणाम नहीं होतीं, बल्कि इनके पीछे गहरे सामाजिक संरचनात्मक कारण होते हैं। शिक्षा, धर्म, अपराध, आत्महत्या और कानून जैसे क्षेत्रों में उनका दृष्टिकोण आज भी आधुनिक समाजशास्त्रियों, शिक्षाविदों और नीति–निर्माताओं के लिए मार्गदर्शक है। उनकी कार्यात्मकता पर आधारित दृष्टिकोण ने समाज के संतुलन और सामंजस्य की समझ विकसित की। यद्यपि उनकी कुछ अवधारणाओं की आज आलोचना होती है, फिर भी उनका योगदान समाजशास्त्र के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण और स्थायी है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. Durkheim, É- 1893- The division of labour in society- Free Press-

2- Durkheim, É- 1895- The rules of sociological method- Free Press-

3- Durkheim, É- 1897- Suicide: A study in sociology- Free Press-

4- Durkheim, É- 1912- The elementary forms of religious life- OÛford University Press-

5- Coser, L- A- 1971- Masters of sociological thought: Ideas in historical and social context- Harcourt Brace Jovanovich-

6- Giddens, A- 1978- Durkheim: A critical introduction- Duckworth

7- Ritzer, G- 2011- Sociological theory -8th ed—McGraw-Hill Education-

8- Bottomore, T- B- 1971- Sociology: A guide to problems and literature- Vintage Books-

9- Parsons, T- 1937- The structure of social action- McGraw-Hill-

10- Nisbet, R- A- 1974- Émile Durkheim: Conservative moralist- Prentice-Hall-